समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 19 August 2026

भारत का फार्मा क्षेत्र अगस्त मे 8% वृद्धि के साथ 2030 तक 130 अरब डॉलर तक पहुंचने की ओर अग्रसर

Publisher

Published on 20 Sep 2025

भारत का **फार्मास्युटिकल सेक्टर** लगातार तेजी से बढ़ रहा है। अगस्त 2025 में इस उद्योग ने **8% की वृद्धि दर** दर्ज की है, जो यह दर्शाता है कि भारत की दवा और स्वास्थ्य सेवा बाजार की **स्थिर और मजबूती वाली वृद्धि** जारी है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह उद्योग **2030 तक 130 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है**, जिससे यह वैश्विक फार्मा बाजार में भारत की स्थिति को और मजबूत करेगा।

अगस्त 2025 की वृद्धि का विश्लेषण

अगस्त में फार्मा उद्योग की वृद्धि मुख्य रूप से **जेनरिक दवाओं, बायोलॉजिक्स और वैक्सीन उत्पादन** में वृद्धि से प्रभावित रही।

- **जेनरिक दवाओं की मांग** घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़ी।
- कोविड-19 महामारी के बाद **वैक्सीन और बायोटेक उत्पादों की निरंतर मांग** बनी रही।
- स्वास्थ्य देखभाल खर्च में वृद्धि और **सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का विस्तार** भी वृद्धि के पीछे प्रमुख कारण रहे।

विशेषज्ञों ने बताया कि अगस्त में **8% की वृद्धि दर** पिछले साल की तुलना में काफी मजबूत संकेत है और यह इंडस्ट्री के स्थिर विकास को दर्शाता है।

फार्मा सेक्टर के प्रमुख योगदान

भारत का फार्मा उद्योग केवल घरेलू स्वास्थ्य देखभाल के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह **वैश्विक बाजार मे भारत की स्थिति** को भी मजबूत करता है।

मुख्य योगदान:

1. **जेनरिक दवाओं का निर्यात** – अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका के बाजार में भारतीय जेनरिक दवाओं की मांग बढ़ी।
2. **वैक्सीन और बायोलॉजिक्स** – वैश्विक स्तर पर भारत के उत्पादन क्षमता की पहचान।
3. **क्लिनिकल ट्रायल और रिसर्च** – नई दवाओं और चिकित्सा समाधानों के विकास में योगदान।
4. **रोजगार और निवेश** – फार्मा सेक्टर नई नौकरियों और निवेश के अवसर पैदा कर रहा है।

भविष्य का परिदृश्य

विशेषज्ञों के अनुसार, यदि यह वृद्धि दर जारी रहती है, तो भारत का फार्मा सेक्टर **2030 तक 130 अरब डॉलर तक** पहुंच सकता है।

इसके लिए प्रमुख कारक होंगे:

- **नवाचार और अनुसंधान मे निवेश** – नई दवाओं और चिकित्सा तकनीकों का विकास।
- **वैश्विक निर्यात बढ़ाना** – अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा और गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- **सरकारी समर्थन और नीति सुधार** – उत्पादन लागत कम करना और नए उद्योग निवेश को बढ़ावा देना।
- **डिजिटल हेल्थकेयर और फार्मा टेक्नोलॉजी** – रोगियों तक पहुंच और डेटा आधारित स्वास्थ्य समाधान।

इस तरह भारत **वैश्विक फार्मास्युटिकल मार्केट मे शीर्ष देशों मे शामिल** होने की ओर अग्रसर है।

औद्योगिक विशेषज्ञों की राय

फार्मा उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि भारत का यह उद्योग **विश्वस्तरीय गुणवत्ता और लागत-प्रभावशीलता** के कारण तेजी से बढ़ रहा है।

एक विशेषज्ञ ने कहा:

“[illegible], [illegible] 2025 [illegible] 2030 [illegible], [illegible] 130 [illegible]”

सरकार की पहल और समर्थन

सरकार ने फार्मा उद्योग के लिए कई **सहायक योजनाओं और नीतियों** की घोषणा की है:

- **औद्योगिक पार्क और हब** – दवा निर्माण और अनुसंधान के लिए सुविधा।
- **निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं** – वैश्विक बाजारों में भारतीय दवाओं को प्रतिस्पर्धात्मक बनाना।
- **वैज्ञानिक और तकनीकी प्रशिक्षण** – नई तकनीक और अनुसंधान क्षमता बढ़ाना।

सरकार का कहना है कि **फार्मा सेक्टर के विकास को प्राथमिकता** दी जा रही है और इसे स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

उपभोक्ताओं और रोगियों के लिए प्रभाव

फार्मा उद्योग की बढ़ती उत्पादन क्षमता और निरंतर नवाचार का सीधा लाभ **रोगियों और उपभोक्ताओं** को मिलता है।

- **सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवाएं** उपलब्ध होती हैं।
- **नई चिकित्सा तकनीक और बायोलॉजिक्स** रोगियों के लिए उपलब्ध होते हैं।
- स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में **समग्र सुधार और पहुंच** बढ़ती है।

इस तरह उद्योग की वृद्धि का असर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और स्वास्थ्य दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

भारत का फार्मा सेक्टर अगस्त 2025 में 8% की वृद्धि के साथ **स्थिर और मजबूती वाली वृद्धि** दिखा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि यह रफ्तार जारी रहती है, तो 2030 तक उद्योग का आकार **130 अरब डॉलर तक** पहुँच सकता है।

यह उद्योग न केवल भारत की **आर्थिक वृद्धि और रोजगार** में योगदान देगा, बल्कि **वैश्विक स्वास्थ्य क्षेत्र मे भारत की स्थिति** को भी मजबूत करेगा।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.